शिक्षा में भागीदारी को बढ़ावा

आलेख: मनीष चंद फोटो: अजीत कुमार

शिक्षाविद इस बात पर विचार कर रहे हैं कि भारतीय और अमेरिकी विश्वविद्यालयों के बीच टिकाऊ रिश्ते और भारत के शैक्षिक परिसरों को अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए लुभावना बनाने को क्या किया जाए।

अमेरिका में उच्च शिक्षा पा रहे विदेशी छात्रों में भारतीय छात्रों की संख्या सबसे ज्यादा है। लेकिन भारत में अमेरिकी छात्रों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। एक अमेरिकी स्वैच्छिक संगठन 'द इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंटरनेशनल एजुकेशन' की ओपन डोर्स रिपोर्ट 2008 के अनुसार 2006-07 के शैक्षिक सत्र में 2,627 अमेरिकी छात्रों ने भारत में शिक्षा पाई, हांलाकि पिछले एक दशक में अमेरिकी छात्रों की संख्या में 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, फिर भी अधिक से अधिक अमेरिकी छात्रों को भारत में पढ़ाई के लिए आकर्षित करने और शैक्षिक सहयोग को प्रोत्साहन देने की पर्याप्त संभावना है।

हाल ही में दिल्ली में हुई एक दो दिवसीय कार्यशाला में अमेरिकी और भारतीय शिक्षाविदों ने दोनों देशों के विश्वविद्यालयों के बीच दीर्घजीवी भागीदारी को प्रोत्साहन देने और भारतीय शिक्षा संस्थानों को उनके परिसरों का अंतरराष्ट्रीयकरण करने के लिए प्रोत्साहित करने की संभावनाएं तलाशी।

कार्यशाला का आयोजन अमेरिकी स्वैच्छिक संस्था 'द एकेडमी फ़ॉर एजुकेशनल डवलेपमेंट' ने किया। अमेरिकी शिक्षाविदों और 30 भारतीय शिक्षाविदों ने छात्रों की सुरक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषयों से लेकर अनुबंध तैयार करने की जटिलताओं, विश्वविद्यालयों का प्रचार, आपातकालीन परिस्थितियों से निपटना और पढ़ाई के लिए विदेश जाने से पहले सांस्कृतिक परिचय जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की ।

द एकेडमी फ़ॉर एजुकेशनल डवलपमेंट द्वारा प्रकाशित *हैंडबुक ऑफ़ होस्टिंग: द एईडी गाइड टु वैलकमिंग यूएस स्टूडेंट्स टु योर कैंपस* पर आधारित

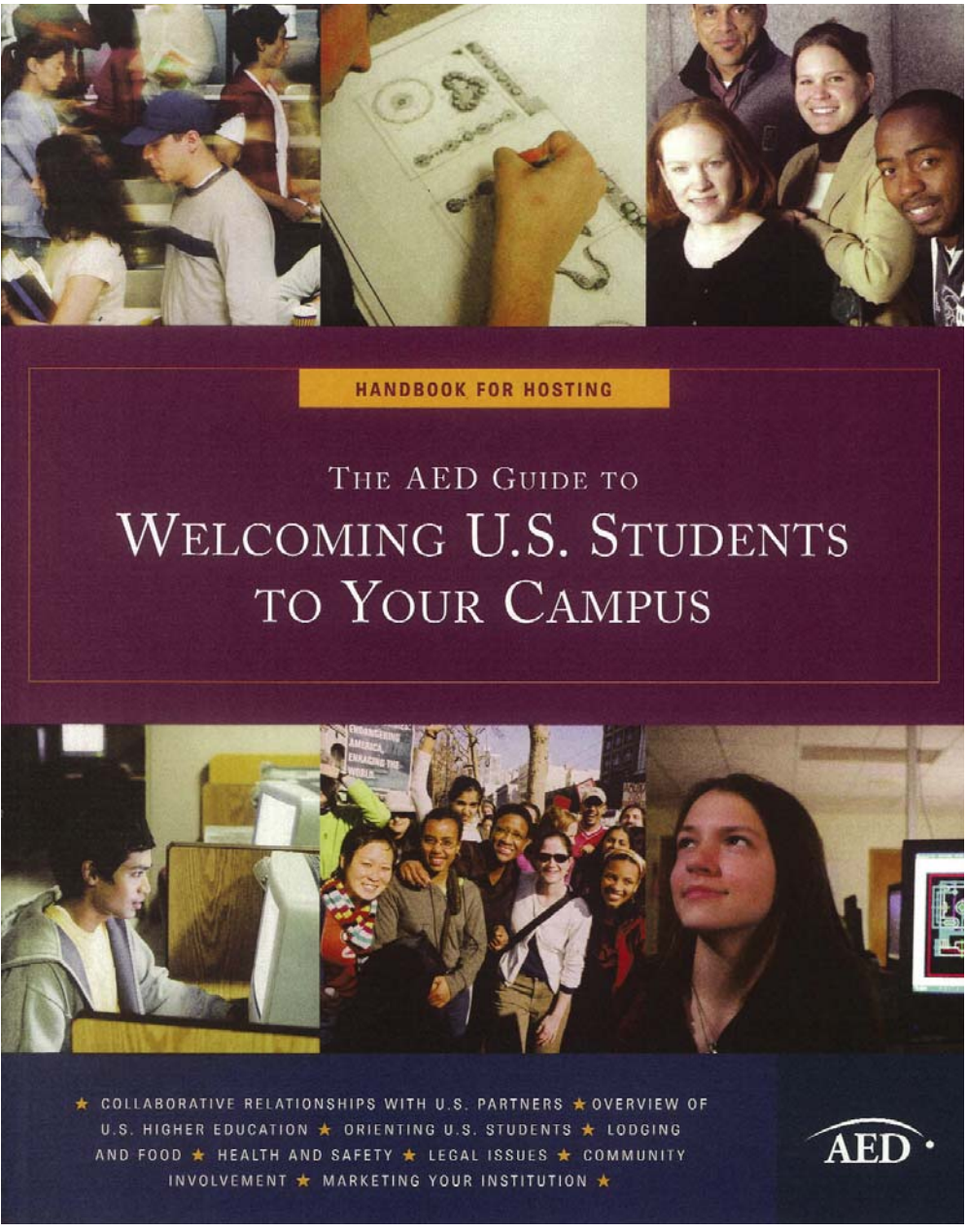

कार्यशाला में विदेश में पढ़ो कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के अमेरिकी सरकार के प्रयासों और भारतीय विश्वविद्यालय परिसरों को अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए आकर्षक बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला।

पुणे विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय केंद्र की निदेशक वसुधा गरडे के अनुसार अंतरराष्ट्रीयकरण के दौर में विश्वविद्यालय का वैश्वीकरण सहायक सिद्ध होता है। पुणे विश्वविद्यालय में आजकल लगभग 9,500 विदेशी छात्र पढ़ रहे हैं। इनमें कई अमेरिकी छात्र भी शामिल हैं। वसुधा गरडे कहती हैं, ''वह भारतीय संस्कृति, खानपान और संगीत को आत्मसात कर लेते हैं, संस्कृतियों के आदान-प्रदान से उनके संकोच और शंकाएं दूर हो जाती हैं।''

बिल्कुल बाएं: अमेरिकी विद्यार्थियों का अपने परिसर में स्वागत करने से संबद्ध एईडी गाइड प्रदर्शित करते कार्ल ए. हेरिन।
बाएं बीच में: पैट्रिसिया मार्टिन प्रतिनिधियों से बातचीत करते हुए।
बाएं: यूनिवर्सिटी ऑफ़ कोलोरैडो, बाउल्डर की किम क्रूत्ज़र कार्यशाला में।

कुछ लोग अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों को ब्रांड बिल्डिंग निवेश के रूप में देखते हैं। नई दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज फ़ॉर विमेन की वरिष्ठ लेक्चरर कनिका खंडेलवाल अग्रवाल कहती हैं कि इसमें हमारे कॉलेज की छवि सुधरती है और ग्लोबल ब्रांडिंग भी होती है।

अधिकतर अमेरिकी छात्र अब भी भारत में इतिहास,भाषा, संगीत, नृत्य और फिल्म जैसे विषय पढ़ने आते हैं। लेकिन पुराने प्रचलन में कुछ बदलाव आने लगा है। अब बहुत से छात्र जमीनी विकास, सूचना प्रौद्योगिकी, वैकल्पिक चिकित्सा और प्रबंधन जैसे विषय भी पढ़ने लगे हैं, और इसका एक लाभ यह भी है कि भारत में शिक्षा प्राप्त करने से अमेरिकी छात्रों को क्रेडिट भी मिलते हैं।

कार्यशाला के संचालकों में से एक कार्ल हेरिन अंतरराष्ट्रीय शिक्षाविद हैं, वह पिछले दो दशक से 'स्टडी एब्रॉड' कार्यक्रम से जुड़े हैं। उनका कहना है, ''नई आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा भारत दुनिया के आकर्षण का केन्द्र है। भारत और अमेरिकी सरकार के औपचारिक रिश्तों के आयाम भी बदले हैं। आज से एक दशक पहले की तुलना में दोनों के संबंधों में बेहतर तालमेल और मित्रता है। ''

अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। वर्ष 2007 में दोनों देशों के बीच लगभग 41.6 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ। भारत से अमेरिका यात्रा करने वालों और अमेरिका से भारत आने वालों की संख्या भी बढ़ी है। हैदराबाद विश्वविद्यालय में समाज शास्त्र की एसोसिएट प्रोफ़ेसर अपर्णा रायाप्रोल कहती हैं, ''1990 में उदारवाद के बाद से हुई आर्थिक तरक्की से भारत में लोगों की रुचि नए सिरे से बढ़ी है। भारत में लोगों की रुचि और बढ़ रही है, जिसके कारण पिछले दस साल में 'स्टडी इन इंडिया' कार्यक्रम को सफलता मिली है।'' 2007-08 शैक्षिक सत्र में 146 भागीदार थे। पिछले एक दशक के दौरान लगभग 1,000 अमेरिकी छात्र 6 से 8 सप्ताह का एक समेस्टर का कोर्स करने भारतीय विश्वविद्यालयों में आए।

पेन्सिलवैनिया विश्वविद्यालय की पैट्रिसिया मार्टिन स्टडी एब्रॉड कार्यक्रमों को सामरिक कूटनीति का दर्जा देती हैं। उनका मानना है कि इस कार्यक्रम के पीछे मूल विचार यह है कि वार्तालाप के माध्यम से परिस्थितियों को सुगम बनाया जाए। जब भारत में कोई घटना होगी तो भारत से पढ़ कर गए अमेरिकी छात्र भारतीय संस्कृति और प्रणाली के दूत के रूप में काम करेंगे। ''युवा अपने उत्साह, उल्लास और आशावाद के कारण अपने देश के अच्छे प्रतिनिधि और कूटनीतज्ञ साबित होते हैं।''

अमेरिका में भारत के राजदूत रह चुके ललित

ज़्यादा जानकारी के लिए:

एलिएंस फ़ॉर इंटरनेशनल एजुकेशनल एंड कल्चरल एक्सचेंज
http://www.alliance-exchange.org

अमेरिका-भारत शैक्षिक प्रतिष्ठान
http://www.usief.org.in/

एसोसिएशन ऑफ़ इंटरनेशनल एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेटर्स
http://www.aieaworld.org

फोरम ऑन एजुकेशन एब्रॉड
http://www.forumea.org

ऊपर बाएं: कार्यशाला में कश्मीर विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर मोइउद्दीन संगमी।
ऊपर: आपसी विचार-विमर्श में जुटे सहभागी।
बाएं: प्रतिनिधियों को संबोधित करते कार्ल ए. हेरिन।

मानसिंह कहते हैं, ''विश्व के दो बड़े लोकतंत्रों का अब एक-दूसरे को समझे बिना काम नहीं चल सकता। हमें ज्यादा से ज्यादा अमेरिकी छात्रों को भारत में पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे हमें न केवल अमेरिकियों को बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलेगी बल्कि अमेरिकी विद्वानों की एक ऐसी जमात भी खड़ी होगी जो भारत को इसकी सभी जटिलताओं और विविधताओं को साथ समझते हों।''

पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन विश्वविद्यालय में योजना और विकास के प्रभारी प्रोफ़ेसर वी.सी.झा कहते हैं, हम चाहते हैं एक्सचेंज प्रोग्राम के अंतर्गत ज्यादा से ज्यादा भारतीय छात्र अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ने जाएं। इससे गुणवत्ता कई गुणा बढ़ जाती है।'' शांति निकेतन विश्वविद्यालय मे अमेरिकी और भारतीय छात्र विविध संस्कृतियों और भाषाओं से रूबरू होते हैं। विश्वविद्यालयों में दक्षिण एशिया और यूरोप के छात्रों की अच्छी खासी संख्या है।

नीचे: कार्यशाला में शामिल सहभागी और अमेरिका-भारत शैक्षिक प्रतिष्ठान के कर्मचारी।

11 सितम्बर को अमेरिका पर हुए आंतकवादी हमले के बाद से सांस्कृतिक शिक्षा के लिए उत्सुकता बढ़ी है। अमेरिकी छात्रों में अरबी भाषा सीखने के प्रति उत्साह कुछ ज्यादा ही बढ़ा है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर एम. सलीमुद्दीन कहते हैं, ''विश्वविद्यालय का अमेरिकी विश्वविद्यालयों से संपर्क बढ़ता है तो बहुत सी गलत धारणाएं दूर होंगी और उन्हें समझ आएगा कि मुस्लिम विश्वविद्यालय कैसा होता है। इससे अमेरिकियों की भारतीय मुसलमानों के बारे में समझदारी बढ़ेगी और दो सभ्यताओं के बीच संवाद का रास्ता निकलेगा।''

एजुकेशन अब्रॉड प्रोग्राम की मूल भावना है ज्ञान और अवधारणा के बीच की खाई को पाटना। हैदराबाद विश्वविद्यालय की अपर्णा रायाप्रोल कहती हैं, ''अमेरिकी छात्र कई बार भारत की रूढ़िगत छवि मन में लेकर आते हैं। वे सोचते हैं कि भारत एक ऐसा देश हैं जहां सड़कों पर आवारा गायें घूमती हैं, यह राजा-महाराजाओं और सपेरों का देश है, लेकिन जब वे भारत आते हैं तो उनके मन में बसी भारत की छवि बदल जाती है। वे देखते हैं कि यहां की महिलाएं प्रगतिशील हैं। वे बड़ी-बड़ी कंपनियों की मुखिया हैं और यहां मैकडॉनल्ड रेस्तरां भी हैं।''

मनीष चंद *नई दिल्ली में रहते हैं और इंडो-एशियन न्यूज सर्विस के वरिष्ठ संपादक तथा अफ्रीका क्वार्टरली के संपादक हैं।*